# सद्गुरु तत्व बोध
# SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 183

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
मार्च – 2020


॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥


**Publisher**
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

**Patron**
Anand Bapshet

**Editorial**
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

**Subscription**
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

**Overseas**
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

**Printed By**
Soni Printers
Cell : 09718657567

**Published Every Month**

©All rights reserved with Publisher

## गुरूबंधु भगिनियों

आज COVID 19 (CORONA VIRUS) यह जगत का सबसे बड़ा प्रोब्लेम है। इस प्रकार के विषाणू का प्रभाव क्यों होता है इसका अभ्यास हम करते है और उसी के साथ वं. दादाजी का महाकारण अवस्था का कार्य समझने की कोशिश करते है।

वं. दादाजी त्रिकाल ज्ञानी थे। याने तीन काल मतलब भूत–वर्तमान और भविष्यकाल इतना ही सीमित त्रिकाल ज्ञान का अर्थ नही है। त्रिकाल ज्ञान याने तीन स्थितियों का ज्ञान याने स्थल–काल–समय (SPACE-TIME-LIMIT).

हमें पता है कि पृथ्वी अपने अक्ष पर एक दिन में घूमती है, जिसे हम परिभ्रमण कहते हैं और उसी प्रकार खुद के अक्ष पर घूमते घूमते वह सूर्य की परिक्रमा करती है। एक दिन से लगभग 365 दिन तक वह गती में खुद की ओर घूमते घूमते सूर्य के चारो ओर वर्ताकार पथ मे घूमती हैं। यह परिक्रमण और परिभ्रमण करने की गति से पृथ्वी वातावरण में शक्ति

फेंकती है। उसी प्रकार अन्य ग्रह और तारे भी नभोमंडल में गति में घूमते रहते हैं और अपने परिसर में शक्ति फेंकते रहते है। ज्यादा गति की शक्ति, कम गति के शक्ति को अपने ओर खींचती है। जिस प्रकार exhaust fan हवा खींचता है उसी प्रकार यह कार्य आसमंत में चलता रहता है और अनगिनत शक्तियाँ इस नभोमंडल में घूमती रहती हैं। आसमान में की ग्रह–तारों की स्थिति, उन की युती (पृथ्वी के साथ एक रेवा में आना) या उनकी अलग अलग स्थिति, पृथ्वी पर असर करती है।

वं. दादाजी अंतरिक्ष का और पंचांग का याने ग्रह–तारों की स्थिति और उनका परिणाम इसका पूरा ज्ञान था लेकिन उनका विश्वास खुद को या हम सभी को प्राप्त हुवे पंचांग याने पंच मतलब पाँच और अंग मतलब शरीर – याने पाँच तत्वों के इस शरीर पर ज्यादा था और उसको पूरी तरह कार्यक्षम बनाना यह उनका उद्देश्य था।

विमोचन एवं दीक्षाओं की सिद्धता करने के बाद 1976 में उन्होने कामकाज बंद कर (सेवकों को सोंपकर) खुद ने महाकारण अवस्था का कार्य संपन्न करने को लिया।

अंतरिक्ष से कौन सी शक्तियाँ कब कहा से निकल रही है और उसे किस जगह पकड़ना है यह समझकर अगले पाँच सालों में 1977 से 1983 तक पाँच केंद्रों पर स्थल–काल–समय समझकर अनुष्ठान और साधना की। इस दौरान उन्होने दो से ढाई लाख किलोमीटर प्रवास किया। तब वं. दादाजी ने बताया था कि ऐसी ही एक Wave Length पूर्व दिशा से कुछ साल पहले निकली है, जिसका उपयोग जापान ने भौतिक शास्त्रों की प्रगति के लिए किया, उसका उपयोग वं. दादाजी को अध्यात्मिक उन्नति के लिये करना था। उसी के लिये रूद्रावर्तन करके, जो ऋषिजनों ने सिद्धता की थी, याने रूद्र, सूक्त और ध्वनीय कर्म (यज्ञ) उस मार्ग से ग्यारह (11) हवन और फिर महारूद्र स्वाहाकार कर, ऊँकार शक्ति को सौम्य किया। उसी प्रकार उन पाँच सालों में ग्रह–तारों की स्थिति के योग 150 से 2500 साल के बाद जो आये था उनका लाभ वे शक्तियाँ धारण कर वं. दादाजी को प्राप्त करना था। ऐसी अनेक शक्तियों का लाभ लेकर वं. दादाजी ने प्रतिमा सिद्धता, कारण दीक्षा, ऊँकार साधना सिद्धता, श्री शक्ति पीठ स्थापना

और फिर महाकारण दिशा, फिर प्रज्ञा अवस्था आदि सिद्धता उस गुरूमार्ग में अंतर्भूत की।

खगोल या अंतरिक्ष से जो शक्ति के स्वंदन निकलते थे, वे वं. दादाजी को ज्ञात होते थे और उनको धारण करने के लिये वं. दादाजी ने एक साधन निर्माण किया। उन शक्तियों को वं. दादाजी ने उस साधन में समाया और उसे शक्ति स्वरूप कर ऊँकार साधना सिद्ध की।

महाकारण शक्ति का कार्य वं. दादाजी किस प्रकार किया जो पिछले सैंकड़ों सालों से जो शक्ति पृथ्वी और अन्य ग्रह एवं तारों से अंतरिक्ष में फेंकी गयी थी, उसमें से मानवों के उद्धार के लिये जो शक्ति है उसे ढूंढकर, उसे गुरू शक्ति के माध्यम से आवाहनित करके फिर स्थल–काल और समय के अनुसार योग्य जगह (स्थान) उसे अपने साधन में धारण कर फिर ऊँकार साधना शक्ति स्वरूप सिद्ध करके हम सभी भक्तगणों को प्रदान की। अब हमारा कल्याण करने के लिये इससे अन्य श्रेष्ठ साधन जगत में नही है। इसी के लिये अपने इस गुरूमार्ग में ऊँकार साधना, प्रतिमा आदि का लाभ लेने के बाद कोई ग्रह–तारों का प्रादुर्भाव (adverse effect) हम पर नही होता।

इस वातावरण की शक्ति से ही जीव, पेड़ पौधे आदि का उद्धार निसर्गतः होता है। आज जो ऋतु (seasons) हम देखते है, उसका कारण पृथ्वी का अक्ष और उसका परिक्रमण एवं परिभ्रमण है। आम के पेड़ को आम सिर्फ इसलिये नही आते क्योंकि वो आम का पेड़ है, तो तभी आते है, जब वातावरण की अनुरूप शक्ति, आम के पेड़ की शक्ति से एकरूप हो जाती है। इस प्रकार निसर्ग, आसमंत की शक्तियों का लाभ लेता रहता है। उन शक्तियों को लाभ मानवों को भी आसानी से प्राप्त हो इसीलिये वं. दादाजी ने सिद्ध किया हुआ यह गुरू मार्ग है।

पृथ्वी के गति से और उसकी अंतरिक्ष की स्थिति एवं खगोल की शक्तियाँ जो पृथ्वी पर प्रवाहित होती है, और तेज तत्व से पृथ्वी पर जीव की निर्मिती होती है। हवा बंद डिब्बे में अगर हमने अनाज रखा तो भी उसके अंदर कीड़े तैयार हो जाते है। उसी प्रकार जापान, अमेरिका जैसे देश खोज कर रहे है कि अचानक सागर में कोई एक प्रकार की हजारों मछलियाँ दिखाई देती है और कुछ ही दिन में वे गायब हो जाती है। इसी गतियों से विविध शक्तियों से अनेक जीवाणू (Bacteria) एवं विषाणू (Virus) भी पैदा होते है। वे कोई जीव

नही है याने निर्वात अवस्था में (आत्मातक उन्नति करने वाले) नही है लेकिन अपने शरीर में जाकर हमें हानि पहुँचाते है।

इनकी निर्मिती या Activation पृथ्वी की स्थिति एवं अंतरिक्ष की कोई शक्ति की लहरे इनके कक से होती है और उसी प्रकार उनका नाश या De-Activation भी निसर्गतः होगा। पृथ्वी के चारो ओर कृपा का या महाकारण शक्ति का आवरण है। जब Ozone का आवरण खराब होने पर हमें UV Rays की तकलीफ होती है, उसी तरह महाकारण शक्ति का आवरण खराब न होने देना भी हमारा कर्त्तव्य है और उसी के लिये ऊँकार साधना है।

आज के समय जो COVID 19 के विषाणू का प्रादूर्भाव हो रहा है, उस का काल कम से कम हो, यही प्रार्थना हमें हर रोज ऊँकार साधना के बाद करनी चाहिये।

वातावरण का बदल और शास्त्रज्ञों के दवाई के खोज से यह विषाणू इस जगत से जल्द से जल्द निकल जाये, यही वं. दादा और प.पू. बाबा एवं सभी दिव्य, पूण्य विभूतियों के चरणों में प्रार्थना।

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।

## विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

***Sri Saikalp Adhyatm Sanstha***

**"Sai Niketan"**

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

***Please send your yearly subscriptions as early as possible***